

डॉ. रॉबर्ट यारब्रो, द जोहानिन एपिस्टल्स, सत्र 6, 1 जॉन फुल स्केल फेथ, खंड 2 [2:7-17 केंद्रीय आज्ञा], खंड 3 [2:18-3:8] मुख्य परामर्श

यह डॉ. रॉबर्ट यारब्रो और जोहानिन एपिस्टल्स, बैलेंसिंग लाइफ इन क्राइस्ट पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 6, 1 जॉन, पूर्ण पैमाने पर विश्वास है। खंड 2 [2:7-17], केंद्रीय आज्ञा। खंड 3 [2:18-3:8] मुख्य सलाह।

हम 1 जॉन में अपनी व्याख्यान श्रृंखला जारी रखते हैं, और मैं इस श्रृंखला को जोहानिन एपिस्टल्स, बैलेंसिंग लाइफ इन क्राइस्ट कह रहा हूँ। पिछले व्याख्यान में, हमने मसीह में विश्वास के परस्पर क्रिया को देखा जो सुसमाचार शब्द के मंत्रालय के माध्यम से आता है और यह कैसे व्यवहार को बदलता है ताकि लोग ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करें जो ईसाई धर्म के साथ चलते हैं।

लेकिन वे लोगों को संबंधों के मामले में भी बदलते हैं, इसलिए जबकि लोग अमूर्त रूप से ईश्वर में विश्वास कर सकते हैं, मसीह में अपने विश्वास के माध्यम से उनका ईश्वर के साथ एक व्यक्तिगत संबंध होता है। और ये चीजें बढ़ रही हैं, विश्वास बढ़ रहा है, हमारे लिए ईश्वर के तरीकों, उनकी आज्ञाओं, उनकी शिक्षाओं के साथ हमारा अनुपालन बढ़ रहा है, और ईश्वर के लिए हमारा प्रेम और वास्तविकता की हमारी भावनाएँ बढ़ रही हैं, लेकिन यह संतुलित जीवन है जहाँ ईश्वर के वचन का कार्य हमें विश्वास, कार्यों और ईश्वर के साथ संबंधों में बढ़ा रहा है। और पिछले व्याख्यान में, हमने यूहन्ना के पहले भाग को पढ़ा, जिसमें हमने 1 यूहन्ना के केंद्रीय बोझ के बारे में बात की, और वह बोझ ईश्वर के बारे में है और वह कौन है, उसका चरित्र, उसकी गतिविधि, और यूहन्ना यह कहकर इसका सारांश देता है कि ईश्वर प्रकाश है और उसमें बिल्कुल भी अंधकार नहीं है।

और वह कहता है कि मुझे लगता है क्योंकि वह एक ऐसी स्थिति के लिए लिख रहा है जिसमें, विभिन्न तरीकों से, अंधकार स्पष्ट है, और वह चाहता है कि इस स्थिति में लोग, मण्डली, वह चाहता है कि वे परमेश्वर के प्रकाश का आनंद लें और परमेश्वर से दूर या परमेश्वर के विरुद्ध अंधकार में न चलें। इसलिए, इस विशेष व्याख्यान में, मैं अगले दो खंड करना चाहता हूँ, और वे ऊपर चार्ट पर नीले रंग से चिह्नित हैं, और आप देख सकते हैं कि खंड 2 अध्याय 2 में है, और फिर खंड 3 अध्याय 2 को समाप्त करता है और 1 यूहन्ना के अध्याय 3 में चला जाता है। खंड 2 के पहले शब्द हैं प्रिय, मैं तुम्हें लिख रहा हूँ, और उस खंड को मैं केंद्रीय आज्ञा कह रहा हूँ, जो सदियों पुराने संदेश को मूर्त रूप देता है, और हम देखेंगे कि वह संदेश क्या है।

तो, हम पहले भाग में केंद्रीय बोझ से दूसरे भाग में केंद्रीय आज्ञा की ओर बढ़ते हैं, और फिर तीसरे भाग में, इस व्याख्यान के अंतिम आधे भाग में, हम जॉन की मुख्य सलाह के बारे में बात करेंगे। वह चीजों का वर्णन कर रहा है, वह चीजों का आग्रह कर रहा है, लेकिन उसके पास कुछ बहुत ही खास सलाह है जो पत्र के केंद्र की ओर जा रही है, हम इसे मसीह में जीने में सफलता कह सकते हैं। तो, आइए पहले भाग 2 के इस पहले भाग को देखें, और भाग 2 केंद्रीय आज्ञा है, सदियों पुराने संदेश को शामिल करें, और हम इसे दो भागों में विभाजित कर सकते हैं।

सबसे पहले मैं इसे नीला रंग देता हूँ क्योंकि मुझे नीला रंग सारांश के रूप में पसंद है, इन शीर्षकों को अलग करना। तो यह खंड 2 है, केंद्रीय आज्ञा, सदियों पुराने संदेश को मूर्त रूप देती है, और आइए उन आयतों को पढ़ें जिन्हें हम देख रहे हैं। ध्यान दें कि इस खंड में कोई लाल अक्षर नहीं हैं, वह स्पष्ट रूप से ईश्वर के बारे में बात नहीं कर रहा है, वह लोगों से बात कर रहा है, और वह लोगों का वर्णन कर रहा है, लेकिन यह जॉन में एक दुर्लभ खंड है जिसमें सीधे ईश्वरत्व का कोई संदर्भ नहीं है।

प्रिय, मैं तुम्हें कोई नई आज्ञा नहीं लिख रहा हूँ, बल्कि एक पुरानी आज्ञा लिख रहा हूँ जो तुम्हें नई आज्ञा से मिली है, या शायद मुझे यह कहना चाहिए कि यह एक नई आज्ञा है जो मैं तुम्हें लिख रहा हूँ, जो उसमें और तुममें सत्य है, क्योंकि अंधकार दूर हो रहा है और सच्चा प्रकाश पहले से ही चमक रहा है। अब वहाँ पर ईश्वरत्व का एक अप्रत्यक्ष संदर्भ था, वह , जो ईश्वर में या मसीह में सत्य होगा, क्योंकि यह उसमें सत्य है यह उनमें भी सत्य है, क्योंकि अंधकार दूर हो रहा है और सच्चा प्रकाश पहले से ही चमक रहा है। जो कोई भी कहता है कि वह प्रकाश में है और अपने भाई से घृणा करता है वह अभी भी अंधकार में है।

जो कोई अपने भाई से प्रेम करता है, और यहाँ भाई का मतलब मेरे विचार से साथी विश्वासी से है, वह ज्योति में रहता है और उसमें ठोकर खाने का कोई कारण नहीं है, लेकिन जो कोई अपने भाई से घृणा करता है वह अंधकार में है और अंधकार में चलता है और नहीं जानता कि वह कहाँ जा रहा है क्योंकि अंधकार ने उसकी आँखों को अंधा कर दिया है। तो हम इन आयतों में क्या देखते हैं जो हमें संदेश की प्रकृति और संदेश के निहितार्थ बताते हैं? खैर सबसे पहले एक अर्थ में ईसाई संदेश के बारे में कुछ भी नया नहीं है। उस संदेश की पुराने नियम में प्राथमिकता है और यह यीशु के जीवन और यीशु की शिक्षाओं और यीशु की मृत्यु में स्पष्ट है, और यही एक दूसरे से प्रेम करने का संदेश है।

ईश्वर प्रकाश है, लेकिन ईश्वर प्रेम भी है, हम सीखेंगे, और यीशु ने महान आज्ञा सिखाई। उन्होंने न केवल इसे सिखाया, बल्कि इसे जीया भी। महान आज्ञा यह है कि अपने प्रभु परमेश्वर से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी आत्मा, अपनी पूरी ताकत से प्रेम करो, लेकिन इसका एक परिणाम यह है कि यीशु ने कहा कि दूसरी महान आज्ञा पहली आज्ञा की तरह है, अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो।

तो, यह संदेश नया नहीं है और फिर भी यह नया है। यह एक नए अर्थ में सच है कि यह मसीह में सच है और यह उनमें भी सच है, और मैं इसे इस तरह से नीचे रखने जा रहा हूँ ताकि मैं आयतों को बॉक्स के ठीक ऊपर रख सकूँ। याद रखें कि आयत 8 कहती है कि यह उसमें और आप में सच है।

यह छुटकारे की प्रगति के कारण एक नए तरीके से सच है। पुराने नियम के समय में दुनिया को छुड़ाने के लिए परमेश्वर के वादे की पूर्ति का खुलासा हुआ है, और बाइबल सिखाती है कि यह समय की परिपूर्णता में, सही समय पर था, कि परमेश्वर ने अपने बेटे को भेजा, और छुटकारे के रूप में, जैसे-जैसे दुनिया में परमेश्वर का छुटकारे का काम सामने आता है, एक प्रगतिशील, हम कह सकते हैं, दुनिया में अनुग्रह का विकिरण होता है। कभी-कभी , जो बातें यूहन्ना कहता है, वे

किसी अन्य बाइबिल लेखक द्वारा अधिक स्पष्ट रूप से कही गई हैं, और जब मैं ऐसी जगह का पता लगा सकता हूँ, तो मुझे उन छंदों को देखने में कोई आपत्ति नहीं है, और ऐसी जगह रोमियों 13 है, जहाँ यूहन्ना कहता है कि अंधकार दूर हो रहा है और सच्चा प्रकाश पहले से ही चमक रहा है।

प्रेरित पौलुस ने रोमियों 13:11 और उसके बाद के अध्यायों में इसे इस तरह से व्यक्त किया है। वह कहता है, मैं इसे बड़ा कर सकता हूँ ताकि यह स्क्रीन पर दिखाई दे, तुम जानते हो कि तुम्हारे लिए नींद से जागने का समय आ गया है, क्योंकि उद्धार अब हमारे लिए उस समय से ज्यादा निकट है जब हमने पहली बार विश्वास किया था। रात बहुत दूर चली गई है, दिन निकट है, इसलिए आइए हम अंधकार के कामों को त्याग दें और प्रकाश के कवच को पहन लें।

आइए हम दिन के समय की तरह सही तरीके से चलें, न कि रंगरेलियाँ मनाएँ और नशे में, न ही यौन अनैतिकता और कामुकता में, न ही झगड़े और ईर्ष्या में, बल्कि प्रभु यीशु मसीह को धारण करें और शरीर की इच्छाओं को पूरा करने के लिए कोई प्रावधान न करें। यह यूहन्ना द्वारा कही गई बात का विस्तार है जब वह कहता है कि अंधकार दूर हो रहा है और सच्चा प्रकाश पहले से ही चमक रहा है। क्योंकि, जैसा कि मैंने कहा, मसीह के आने और मसीह के मरने और जी उठने और स्वर्गारोहण के साथ परमेश्वर का उद्धार कार्य आगे बढ़ा है, और मसीह का कार्य चर्च के माध्यम से चल रहा है, यह एक नया दिन है।

यह परमेश्वर के उद्धार के कार्य में एक नया दिन है। पद 9 के संदर्भ में, जो व्यक्ति कहता है कि वह ज्योति में है, लेकिन अपने भाई से प्रेम नहीं करता, हम देख सकते हैं कि एक बात कहने की बात लेकिन अलग तरीके से जीने की बात वही प्रतिध्वनित करती है जो यूहन्ना ने पहले ही पिछले पदों में कही है। और जितना हम यूहन्ना में आगे बढ़ते हैं, उतना ही हम यह कहने जा रहे हैं कि यह 1 यूहन्ना है।

मैं हम जितना आगे बढ़ेंगे, उतना ही हम खुद से कहेंगे, क्या मैंने यह पहले नहीं सुना? क्योंकि वह एक ही बात को कई अलग-अलग कोणों से दोहराता है, थोड़े अलग-अलग बिंदुओं को सामने रखता है। और यह, आप जानते हैं, हम उस दोहराव को देखना शुरू कर रहे हैं। लेकिन यह केवल वही नहीं है जो पहले आता है, अंधकार में चलने और अपने भाई से घृणा करने के बारे में यह बात, और इसी तरह की अन्य बातें।

यह कुछ ऐसी घटना का पूर्वाभास देता है जो कुछ ही आयतों में होने वाली है। अगले भाग में, हम एक विराम के बारे में पढ़ने जा रहे हैं। हम ऐसी किसी घटना के बारे में पढ़ने जा रहे हैं जिसमें संभवतः लोग एक-दूसरे से कट जाते हैं, या जिसे जॉन दूसरों से नफरत करना कहते हैं।

और इसलिए, यहाँ यूहन्ना एक आधारशिला रख रहा है, जिसके बारे में वह उन कलीसियाओं में एक समस्या के रूप में रिपोर्ट करने जा रहा है, जिनसे वह बात कर रहा है या जिन्हें वह लिख रहा है। अंत में, इस भाग में, हम देखते हैं कि सुसमाचार पाठक को, यूहन्ना के श्रोताओं को दो तरीकों से सामने रखता है। जो कोई अपने भाई से प्रेम करता है, वह ज्योति में रहता है।

लेकिन जो कोई अपने भाई से नफरत करता है वह अंधकार में है, अंधकार में चलता है, नहीं जानता कि वह कहाँ जा रहा है। अंधकार उसकी आँखों में अंधा है। यह एक ऐसे परमेश्वर का स्वभाव और निहितार्थ है जो प्रकाश है।

परमेश्वर प्रकाश है। वह प्रकाश प्रदान करता है और जीवन प्रदान करता है। मुझे लगता है कि वह प्रकाश में जीवन प्रदान करता है, लेकिन इससे वे लोग अंधकार में रह जाते हैं जो उसके पुत्र को अस्वीकार करते हैं।

तो, यह संदेश की प्रकृति और संदेश के निहितार्थ के बारे में जॉन की शिक्षा है। यह पुराना और नया दोनों है। संदेश एक दूसरे से प्रेम करना है।

लोगों का यह कहना कि वे प्रकाश में हैं, लेकिन दूसरों से प्रेम नहीं करना, एक समस्या है। और यह सक्रिय रूप से उनके विरुद्ध काम कर रहा हो सकता है। या जब हम इसका अध्ययन करेंगे, तो मुझे लगता है कि हम देखेंगे कि घृणा का एक रूप उदासीनता है, कि हम बस परवाह नहीं करते।

इसलिए कभी-कभी मुझे लगता है कि जब लोग इसे पढ़ते हैं, तो वे सोचते हैं, ठीक है, यह मुझ पर लागू नहीं होता। मैं किसी से नफरत नहीं करता। लेकिन बाइबिल का आह्वान है कि अपने पड़ोसी से प्यार करो।

बाइबिल का आह्वान है कि अपने पड़ोसी के प्रति तटस्थ या उदासीन न रहें और आप ठीक रहेंगे। और इसलिए, यही कारण है कि जॉन के लिए, यह या तो प्रेम है या घृणा। क्योंकि यदि आप दूसरों की देखभाल करने के लिए ईश्वर की उपस्थिति और शक्ति के साथ आज्ञा का पालन कर रहे हैं, तो यह एक सक्रिय भागीदारी है।

जहाँ आपको होना चाहिए या जहाँ आपको होना चाहिए, वहाँ सक्रिय रूप से शामिल न होना घृणा करने जैसा होगा। हाल ही में, हमारे क्षेत्र में भयंकर तूफान आया और हमारी ज़मीन पर बहुत सारे पेड़ गिर गए। और मेरे एक पड़ोसी आए, और उनके पास एकड़ ज़मीन है, और उनके पास बहुत सारे पेड़ और जंगल हैं, और उनके पास एक सड़क भी है।

और उसने कहा, एक पेड़ गिरा है। यह मेरी सड़क पर गिर सकता है। यह और भी नीचे जा रहा है, लेकिन मैं और मेरे पति इसका ध्यान रखेंगे।

और मैंने उसकी बात मान ली। लेकिन बाद में, मैं और मेरी पत्नी चले गए, और फिर हम वापस आए, और मैंने देखा कि सड़क के नीचे उनकी संपत्ति पर उनके पति और वह एक स्किड-स्टीयर मशीन और कुछ औजारों के साथ बाहर थे, और वे एक पेड़ को हटाने की कोशिश कर रहे थे जो उनकी सड़क पर गिर गया था। और मैं कह सकता था, ठीक है, उसने कहा कि वे इसे संभाल लेंगे और मुझे अपनी खुद की समस्याओं से निपटना है।

लेकिन ईसाई दृष्टिकोण से, अगर आपका पड़ोसी ज़रूरत में है और आप कुछ ऐसा नहीं करते जो आप कर सकते हैं, तो आप अपने पड़ोसी से नफ़रत कर रहे हैं। अब, मैं अपने पड़ोसी से नफ़रत नहीं करता। मेरे मन में इसके बारे में कोई गहरी भावनाएँ नहीं थीं।

वास्तव में, मैं उसके अपने व्यवसाय की देखभाल करने के लिए काफी खुश था। लेकिन एक ईसाई दृष्टिकोण से, यदि आप किसी के लिए कुछ अच्छा कर सकते हैं, तो इसका मतलब है अपने पड़ोसी से प्यार करना। और इसलिए, मैं अपने औजार लेकर वहाँ गया और पता चला कि वे अपने सिर से ऊपर थे।

यह एक बड़ा पेड़ था। इसे सड़क से हटाना उनके लिए संभव नहीं था। आप जानते हैं, मानवीय अभिमान, कभी-कभी हम लोगों से मदद नहीं माँगना चाहते।

और अंधेरा होने वाला था, और शुक्रवार की रात थी। वे लंबे समय तक किसी को भी अंदर नहीं आने दे रहे थे। फिर वे अपनी सड़क से कैसे हटते? इसलिए मैं आगे बढ़ा और उनकी सड़क से पेड़ काटने में मदद की।

यह दूसरों के लिए एक तरह की देखभाल है क्योंकि हम परमेश्वर को जानते हैं, और परमेश्वर हमारी परवाह करता है। मसीह ने हमारी परवाह की है। जॉन कहते हैं कि ईसाई लोग, जो मसीह को जानते हैं, उन्हें प्रकाश में चलना चाहिए क्योंकि वह प्रकाश में है।

जब उसने ज़रूरतों को देखा, तो उसे दया आ गई। और उसे लगा, मुझे इस बारे में कुछ करना चाहिए, जैसा कि पिता ने मुझे निर्देश दिया है। और उसने ऐसा किया।

तो इस भाग में हम देख रहे हैं, यह नीला भाग, केंद्रीय आज्ञा संदेश को मूर्त रूप देती है। सबसे पहले, हमने संदेश की प्रकृति और निहितार्थों को देखा। अब हम संदेश के मद्देनजर एक पादरी अपील को देखने जा रहे हैं।

और इस एक भाग में, मैंने कुछ ऐसे शब्दों को चुना है जो परमेश्वर को नाम से नहीं, बल्कि सर्वनाम से संदर्भित करते हैं। तो, यह इस पादरी नेता, जॉन की अपने पाठकों से एक अपील है। मैं आप छोटे बच्चों को इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि उसके नाम के कारण या उसके नामों के कारण आपके पाप क्षमा किए गए हैं।

मैं तुम्हें लिख रहा हूँ हे पिताओ, क्योंकि तुम उसे जानते हो जो आदि से है। हे जवानो, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि तुमने दुष्ट पर विजय प्राप्त की है। हे बच्चों, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि तुम पिता को जानते हो।

मैं आपको लिखूंगा हे पिताओ, क्योंकि तुम उसे जानते हो जो आदि से है। मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूँ कि तुम बलवान हो और परमेश्वर का वचन तुम में बना रहता है और तुम ने दुष्ट पर जय पाई है। संसार से और संसार की वस्तुओं से प्रेम मत करो।

यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उसमें पिता का प्रेम नहीं है। क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषाएँ, और आँखों की अभिलाषाएँ और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से है। और संसार उसकी अभिलाषाओं के साथ मिटता जाता है, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा।

तो यह है पादरी की अपील। और हम इसे तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं। सबसे पहले हम प्रशंसा देखते हैं।

आप जानते हैं, मैं आपको लिख रहा हूँ और ये सकारात्मक बातें हैं जो उसे कहना है। यह आध्यात्मिक परिपक्वता या शारीरिक परिपक्वता या दोनों के प्रतिनिधि चरणों की प्रशंसा है क्योंकि विश्वासी संदेश को जीते हैं और विश्वासी चरित्र गुणों में आधारित होते हैं जो संदेश को प्रभावकारी और ईमानदारी के साथ मूर्त रूप देने के लिए आवश्यक हैं। जॉन में जहाँ भी आप पढ़ते हैं, उसका एक अंतर्निहित उद्देश्य अपने पाठकों को प्रेम करने के लिए प्रोत्साहित करना है।

और उसने अभी-अभी प्रेम करने के बारे में बात करना समाप्त किया है, और वह प्रेम करने के बारे में और भी बात करने जा रहा है। लेकिन जैसा कि जॉन चाहता है कि आप प्रेम करें, उसके लिए आपके और आपके जीवन और आपके चरित्र के बारे में कुछ बातें सच होनी चाहिए। उदाहरण के लिए, जैसा कि परमेश्वर चाहता है कि हम प्रेम करें, जैसा कि यह हमें प्रेम करने में सक्षम बनाता है, हमें अपने पापों को क्षमा करवाना होगा।

हमें परमेश्वर को जानना होगा। अगर हम अपने पापों के बोझ तले दबे हुए हैं तो हम परमेश्वर को नहीं जान सकते। और इसलिए मसीह हमारे पापों को दूर करने के लिए आए ताकि हम परमेश्वर के साथ एक रिश्ता बना सकें।

और इसलिए वह उन लोगों की सराहना करता है जिन्हें वह छोटे बच्चे कहता है। कुछ लोग सोचते हैं कि ये युवा विश्वासी हैं। कुछ लोग सोचते हैं कि ये नए विश्वासी हैं।

हम नहीं जानते। लेकिन हम यह जानते हैं कि उनके पाप क्षमा कर दिए गए हैं। और यह उन गुणों में से एक है जो संदेश को मूर्त रूप देने के लिए आवश्यक है।

अगर आपके पाप माफ़ नहीं किए गए तो आप प्यार नहीं कर सकते। मैं आपको लिख रहा हूँ पिताओं को इसलिए क्योंकि तुम उसे जानते हो जो शुरू से है। हमने पहले जिस बॉक्स को देखा था, उसमें 2 निर्देशांक है, जो परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध है।

वे सिर्फ किसी चीज़ पर विश्वास नहीं करते। मसीह में उनके विश्वास के ज़रिए, परमेश्वर ने उनके साथ एक रिश्ता खोला है, और अब वे खुद को परमेश्वर के साथ संवाद में पाते हैं। हम अक्सर खुद से संवाद करते हैं।

हम गाड़ी चलाते समय और रात में जागते हुए अपने आप से सोचते हैं, शायद हम चिंतन कर रहे हैं। हमारे दिमाग में एक संवाद होता है। जब आप मसीह में विश्वास करते हैं, तो आप पाते हैं कि

ईश्वर उस संवाद में शामिल हो जाता है , और आप इस बात से अवगत हो जाते हैं कि मुझे ईश्वर से कुछ कहना है।

और मुझे सुनने की ज़रूरत है और खुद को परमेश्वर के मार्गदर्शन या परमेश्वर के आश्वासन या परमेश्वर की शांति, परमेश्वर के निर्देश के लिए खोलने की ज़रूरत है। वह आपको, पिताओं को लिख रहा है, क्योंकि आप उसे जानते हैं। परमेश्वर जो है, यह मत कहो कि कौन था, परमेश्वर जो है।

वह अस्तित्व में है। वह शाश्वत रूप से विद्यमान है। यह महान, भव्य और अगणनीय पारलौकिक ईश्वर है।

लेकिन तुम उसे मसीह की सेवकाई के ज़रिए जानते हो। और फिर जवान लोगों के लिए, तुमने दुष्ट पर विजय पा ली है। और फिर वह फिर से बच्चों की ओर लौट आता है।

वह कहता है, " तुम पिता को जानते हो । " और वह पिताओं की ओर लौटता है, तुम जानते हो कि वह शुरू से कौन है। उनके बारे में भी यही बात कहता है ।

और फिर युवा पुरुषों, वे कहते हैं, कुछ ऐसा ही प्रभाव डालता है, लेकिन यह थोड़ा अलग है। आप मजबूत हैं, और परमेश्वर का वचन आप में बसा हुआ है। वे शास्त्र पढ़ रहे हैं।

वे शास्त्रों को सुन रहे हैं। वे शास्त्रों में बढ़ रहे हैं। और आपने दुष्ट पर विजय प्राप्त कर ली है।

उन्होंने शैतान की उस पकड़ को तोड़ दिया है जो पहले उन पर थी जब वे मसीह को नहीं जानते थे। इसलिए, ये आयतें चरित्र लक्षणों की प्रशंसा करती हैं, चाहे आप युवा हों, चाहे आप बूढ़े हों, चाहे आप बच्चे हों, या पिता हों, या युवा व्यक्ति हों। और बेशक, यह मर्दाना भाषा में कहा गया है, लेकिन यह महिलाओं पर भी लागू होता है।

यह उन सभी लोगों पर लागू होता है जो मसीह को उनके विभिन्न चरणों में जानते हैं। और यह पत्र कुल मिलाकर हमें लगातार कुछ खास व्यवहारों, कुछ प्रतिक्रियाओं के लिए बुलाता है। और यह एक बेहतरीन चरित्र वर्णन है कि मसीह और ईश्वर की उपस्थिति के बारे में संदेश हमें क्या बनने, क्या करने, क्या जानने और किससे प्रभावित होने, किससे बदलने के लिए तैयार करता है।

अब, छंद छह, 15, और 16 को हम एक पूर्व-आदेश के रूप में सोच सकते हैं। हमें अपने पड़ोसी से प्रेम करना चाहिए। हमें परमेश्वर से प्रेम करना चाहिए।

और उस तरह का प्यार, यह एक परिमाण का वर्णन करता है। यह एक फोकस का वर्णन करता है जो कि जैसा है, और मैंने पहले व्याख्यान में कहा था, यह पहली आज्ञा की तरह है, मेरे अलावा तुम्हारा कोई दूसरा ईश्वर नहीं होगा। ईश्वर के प्रति एक ऐसी निष्ठा और भक्ति होनी चाहिए जिसका किसी और चीज या किसी और से मुकाबला न हो, क्योंकि ईश्वर का प्रेम, ईश्वर का सच्चा प्रेम, ईश्वर की वंदना, ईश्वर का सम्मान, यह निष्कासन है।

यह सभी प्रतिद्वंद्वियों को बाहर निकाल देता है क्योंकि ईश्वर किसी भी अन्य व्यक्ति या वस्तु से महान है। और इसलिए उससे प्रेम करना उसे किसी भी अन्य चीज़ से ऊपर रखना है। इसलिए यहाँ एक पूर्व-आदेश है: संसार से प्रेम मत करो।

अगर कोई अपना परम स्नेह संसार पर लगाता है, तो जाहिर है कि उसका परम स्नेह परमेश्वर पर नहीं है। पिता का प्रेम उसमें नहीं है। और इसका मतलब परमेश्वर के प्रति उनका प्रेम हो सकता है, या इसका मतलब वह प्रेम हो सकता है जो परमेश्वर आपके लिए चाहता है, लेकिन आप इसे प्राप्त नहीं कर सकते क्योंकि आप संसार से इतना प्रेम करते हैं, आप परमेश्वर का प्रेम नहीं चाहते।

और अगर हम दुनिया से गलत हद तक और गलत तरीके से प्यार करते हैं, तो यह विषाक्त है। क्योंकि ईश्वर की इच्छा के बजाय, ईश्वर को देखने की इच्छा के बजाय, ईश्वर पर भरोसा रखने के बजाय, हम शरीर की इच्छाओं, आँखों की इच्छाओं, जीवन के अभिमान पर ध्यान केंद्रित करेंगे। और ये उन शब्दों का अनुवाद करने का प्रयास है जिनका एक समृद्ध अर्थ है।

मैं सिर्फ़ जीवन के गर्व के बारे में बात करूँगा। गर्व शब्द का अनुवाद कभी-कभी " घमंड " के रूप में किया जाता है। इसलिए, यह एक असामान्य शब्द है।

और जीवन के लिए शब्द ज़ोए नहीं है, जो अनंत जीवन से जुड़ा है। यह कुछ ऐसा है जिसकी हमें लालसा करनी चाहिए। यह एक जीवन शक्ति है जो ईश्वर देता है।

लेकिन यहाँ जीवन के लिए शब्द बायोस है। हम इसी से बायोलॉजी शब्द लेते हैं। और इस अर्थ में बायोस का मतलब है आपका रोज़मर्रा का जीवन।

आप जीविका के लिए काम करते हैं, आप कमाते हैं, आप खर्च करते हैं, आप उपभोग करते हैं। यह भौतिक जीवन है। और इसलिए, यह अभिव्यक्ति, भौतिक जीवन का घमंड, जैसा कि हम सभी जानते हैं, या कम से कम हममें से अधिकांश लोग जानते हैं, यह एक शानदार चीज़ है, खासकर जब आप युवा होते हैं और आप मजबूत होते हैं, और शायद आपके पास कुछ खर्च करने की शक्ति होती है, आपके पास दोस्त होते हैं।

बायोस, रोज़मर्रा की ज़िंदगी, जीविका कमाना, सप्ताहांत के लिए जीना, संगीत समारोहों में जाना, पार्टियाँ करना, जश्न मनाना। हो सकता है कि आप एथलीट हों। हो सकता है कि आप पब्लिसिटी में काम करते हों।

शायद आप एक संगीतकार हैं। मेरा मतलब है, मानव उद्यम एक शानदार चीज़ है। लेकिन अगर हम इसे भगवान की तरह मानते हैं, तो यह बहुत खोखला है।

इसका कोई वास्तविक अर्थ नहीं है। और जैसे-जैसे आपकी उम्र बढ़ती है, या शायद आपकी वित्तीय स्थिति खराब होती है, या शायद आपकी सेहत खराब होती है, अचानक आपके पास कुछ भी नहीं होता। जीवन के आनंद और गर्व की खोज के कारण, यह आपको केवल इतनी ही दूर तक ले जाता है।

इसके अलावा, यह जरूरी नहीं कि यह समृद्ध और सार्थक मानवीय संबंधों के लिए अनुकूल हो। बहुत सी शादियाँ इसलिए टूट जाती हैं क्योंकि विवाह में एक या दूसरा साथी वास्तव में साथ आना और एक दूसरे के लिए जीना नहीं चाहता। वे पार्टी करना चाहते हैं।

वह व्यक्ति पार्टी करना चाहता है। और अगर आप सिर्फ पार्टी करना चाहते हैं, या अगर यही आपका मुख्य लक्ष्य है, तो आप शायद उस पार्टी के अलावा किसी और के साथ कोई स्थायी रिश्ता नहीं बना पाएँगे। इसलिए, जॉन चाहता है कि लोग परमेश्वर से प्रेम करें।

वह चाहते हैं कि लोग इस तरह न जियें कि जीवन एक उत्सव बन जाये। और ऐसा करने के लिए, उन्हें यह तय करना होगा कि मैं दुनिया से नाता तोड़ लूँगा जैसा कि मैं पहले करता था, जहाँ यह था मेरे लिए सब कुछ था। इस भाग की आखिरी आयत में जॉन कहते हैं, दुनिया खत्म हो रही है।

दुनिया के लिए, दुनिया के लिए किए गए कामों का कोई भविष्य नहीं है। हम दुनिया में जो काम करते हैं, मानो दुनिया ही उसका अंतिम लक्ष्य है, हम जो करते हैं, वह खत्म हो रहा है। लेकिन परमेश्वर की इच्छा पूरी करने का गुण कभी खत्म नहीं होता और इसका लाभ कभी खत्म नहीं होता।

और अगर आप 1 कुरिन्थियों 3 में पढ़ना चाहते हैं, तो पॉल इस बारे में बात करता है कि हम जो कुछ भी करते हैं, हमारे सभी कामों की परीक्षा होगी, और कुछ चीजें परीक्षा में टिकेंगी, और कुछ चीजें जल जाएँगी। इसलिए, यूहन्ना की भाषा में, वह बस यही कह रहा है, अगर तुम परमेश्वर की इच्छा पूरी करोगे, तो तुम हमेशा के लिए बने रहोगे। तुम्हारे काम हमेशा बने रहेंगे।

भविष्य में जो भी होगा, ईश्वर के साथ आपका रिश्ता हमेशा बना रहेगा। तो यह दूसरा भाग है। और अगले कुछ मिनटों में, मैं तीसरा भाग करना चाहता हूँ, जो हमें अध्याय 218 से अध्याय तीन, श्लोक आठ तक ले जाता है।

और इसकी शुरुआत इन शब्दों से होती है, बच्चों, फिर से वही स्नेहपूर्ण पादरी संबोधन है, बच्चों, यह आखिरी घड़ी है। और इस भाग में, हम वह प्राप्त करने जा रहे हैं जिसे मैं एक मुख्य सलाह कहता हूँ। और सलाह है कि उसके अभिषेक में बने रहें।

और क्योंकि हम उस अभिषेक में बने रहते हैं, इसलिए हमें अनंत जीवन मिलता है। यह खंड A और B और C और D में विभाजित है। इसलिए, हमें जल्दी से आगे बढ़ना होगा। और हम ऐसा कर सकते हैं।

सबसे पहले, कुछ विचार हैं जो सलाह देते हैं कि हमें धीरज रखना चाहिए। बच्चों, यह आखिरी घड़ी है। और जैसा कि तुमने सुना है, मसीह विरोधी आ रहा है।

तो अब, बहुत से मसीह विरोधी आ गए हैं। इसलिए, हम जानते हैं कि यह अंतिम समय है। वे हमसे बाहर चले गए, लेकिन वे हम में से नहीं थे।

क्योंकि अगर वे हमारे साथ होते, तो वे हमारे साथ बने रहते। वह यहाँ एक चर्च के बारे में बात कर रहा है, जिसे हम चर्च का विभाजन कहते हैं। लेकिन वे बाहर चले गए, ताकि यह स्पष्ट हो जाए कि वे सभी हम में से नहीं हैं।

परन्तु तुम पवित्र जन से अभिषिक्त हुए हो। और तुम सब को ज्ञान है। मैं तुम्हें इसलिये नहीं लिखता कि तुम सत्य को नहीं जानते, परन्तु इसलिये कि तुम उसे जानते हो, और इसलिये कि कोई झूठ सत्य से नहीं।

तो, उस आयत से कुछ निष्कर्ष निकलते हैं, सबसे पहले, बुराई और न्याय द्वार पर हैं। अब हम देखते हैं कि यूहन्ना यह पत्र लिख रहा है, लेकिन वह संकट के दौर में पत्र लिख रहा है क्योंकि विश्वास के समुदाय में विभाजन हो गया है। और हम आयत 19 और 20 से सीखते हैं कि बहुत से लोग टिके नहीं हैं।

2 यूहन्ना में, उन्होंने लोगों के आगे बढ़ने के बारे में बात की, आप जानते हैं, प्रेरितिक शिक्षा और जीवन की सीमाओं से बाहर कदम रखते हुए। तो यह वह रूप है जो संकट ले रहा है। ऐसे लोग हैं जो टिके नहीं रहते।

वे आगे बढ़ रहे हैं। वे प्रेरितों के संदेश का विरोध कर रहे हैं। और आपको याद होगा कि गलातियों 1 में पॉल ने कहा है कि भले ही स्वर्ग से कोई स्वर्गदूत या खुद पॉल भी सुसमाचार के आरंभिक संदेश से अलग कुछ प्रचार करें, तो लोगों को इसे नहीं सुनना चाहिए क्योंकि आरंभ में और आरंभ से ही जो संदेश प्राप्त हुआ है, वही सच्चा संदेश है।

और उस संदेश की सच्चाई पक्ष बदलने से रोकती है। वह उन लोगों से कहता है जो रुके हुए हैं, आप पवित्र व्यक्ति द्वारा अभिषिक्त किए गए हैं। और ऊपर नीले रंग में इस अंश के पूरे बिंदु को याद रखें, मुख्य सलाह उसके अभिषेक में बने रहना है।

हम इस बारे में बात करेंगे कि वह क्या है। इस अभिषेक के माध्यम से आपको सारा ज्ञान प्राप्त हो गया है, या क्षमा करें, आप सभी के पास नहीं है, आपके पास सारा ज्ञान नहीं है, आप सभी के पास ज्ञान है। और वह यहाँ इसलिए नहीं लिख रहा है क्योंकि वे सत्य नहीं जानते, बल्कि इसलिए क्योंकि वे जानते हैं।

और क्योंकि सत्य उन झूठों से अलग है जो समुदाय को छोड़ने वाले लोगों को सूचित करते हैं। तो वह उस सत्य के बारे में बात करता है जो कायम रहता है। यह सत्य क्या है? झूठा कौन है? लेकिन वह जो इस बात से इनकार करता है कि यीशु मसीह है।

जाहिर है, जो लोग चले गए हैं वे मसीह की प्रकृति के बारे में जॉन से असहमत हैं। यह मसीह विरोधी है, वह जो पिता और पुत्र को अस्वीकार करता है। जो कोई भी पुत्र को अस्वीकार करता है, उसके पास पिता नहीं है।

जो कोई पुत्र को स्वीकार करता है, उसके पास पिता भी है। जो तुमने आरम्भ से सुना है, वही तुम में बना रहे। यदि जो तुमने आरम्भ से सुना है, वह तुम में बना रहे, तो तुम भी पुत्र में और पिता में बने रहोगे।

और यह वादा उसने हमसे किया है: अनंत जीवन। मैं ये बातें तुम्हें उन लोगों के बारे में लिख रहा हूँ जो तुम्हें धोखा देने की कोशिश कर रहे हैं। मुझे लगता है कि ये वे लोग होंगे जो चले गए हैं और जो चाहते हैं कि वे अपने साथ और लोगों को ले जा सकें।

लेकिन बहुत से लोग पीछे रह गए हैं, और जॉन, आप जानते हैं, उन्हें पहचानता है और उनकी प्रशंसा करता है। लेकिन वह उन्हें लिख रहा है ताकि वे उन लोगों के धोखे में न पड़ें जो चले गए हैं। इसलिए, इन आयतों में, हम सबसे पहले देखते हैं कि चीजें वास्तव में कैसी हैं।

मैं उन्हें सच्चा संकेत कहता हूँ। यीशु मसीह है। यह बात सच है।

वह मसीहा है। वह परमेश्वर के वादों की पूर्ति है। कुछ लोग उत्पत्ति 3:15 में वापस जाकर कहते हैं कि स्त्री का वंश, सर्प का वंश, कुचला जाएगा।

सर्प और उसके वंश का सिर कुचल दिया जाएगा। इसलिए वह इस तरह से उस सत्य के बारे में बात करना शुरू करता है जो हमेशा बना रहता है। यह एक मसीही सत्य है।

यह एक निश्चित तरीका है जिसे किसी और चीज़ में नहीं बदला जा सकता। और अगर ऐसा है, तो यह सच नहीं है। यह झूठ है।

यदि आप इस बात से इनकार करते हैं कि यीशु मसीह है, तो यह कोई नया, ताज़ा विचार नहीं है जिसे हमें आजमाना चाहिए। यह मसीह विरोधी, आत्मा और व्यक्तित्व का प्रकटीकरण है। यह इस मामले में सिर्फ़ एक व्यक्ति नहीं है।

ये वे लोग हैं जिनकी धार्मिक मान्यताएँ यीशु को उस रूप में नहीं दर्शातीं जैसे वह वास्तव में आए थे और जैसे वह वास्तव में अब मौजूद हैं, पिता के साथ एक हैं। एक तार्किक अनिवार्यता है जो सच्चे संकेत से निकलती है। यदि मसीह एक निश्चित तरीके से है, तो, श्लोक 24 में, आपको वही रहने देना चाहिए जो आपने शुरू से सुना था।

और यदि जो तुमने शुरू से सुना है वह वहीं रहता है, वह तुममें बना रहता है, तो तुम पुत्र में बने रहोगे। जो तुमने शुरू से सुना है वह पुत्र को तुम्हारे पास पहुँचाता है। यदि तुम उसमें बने रहते हो, तो पुत्र तुममें बना रहेगा, और तुम पुत्र और पिता में बने रहोगे।

और इसलिए यहाँ पर अनिवार्य है कि हम यहीं रहें, और इसके लिए एक प्रेरणा है। प्रेरणा है अनंत जीवन। और हम इसे छोड़ना नहीं चाहते क्योंकि हम अनंत जीवन को छोड़ना नहीं चाहते।

कम से कम, मैं अनंत जीवन को छोड़ना नहीं चाहता। मुझे अनंत भविष्य में ईश्वर के साथ आशीर्वाद का विचार पसंद है। वह उन्हें ऐसा करने का आदेश देने, उन्हें ऐसा करने के लिए प्रेरित करने के मामले में इस स्थायी चीज़ में और भी आगे बढ़ता है।

मैं इसे अनिवार्य रूप से बने रहने की बात कहता हूँ। और वह कहता है कि जो अभिषेक तुम उससे प्राप्त करते हो वह तुममें बना रहता है। अब, मुझे बस वहाँ रुककर कहना है कि अधिकांश टिप्पणीकारों का कहना है कि यह अभिषेक पवित्र आत्मा है, और निश्चित रूप से परमेश्वर से कोई भी आशीर्वाद जो हमें प्राप्त होता है और जो हमारे भीतर बना रहता है, वह पवित्र आत्मा की सेवा है।

पवित्र आत्मा हमारे साथ मसीह की व्यक्तिगत उपस्थिति है। मसीह अपने दूसरे व्यक्ति के रूप में त्रिएक स्थान और अस्तित्व में है, वह परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ पर है। लेकिन उसने कहा, अगर मैं पिता के पास जाऊँगा, तो मैं तुम्हारे पास एक और दिलासा देनेवाला भेजूँगा।

और उसने अपना पवित्र आत्मा भेजा। इसलिए, अभिषेक में निश्चित रूप से पवित्र आत्मा शामिल है। लेकिन जैसा कि मैंने इस अंश का अध्ययन किया है, मुझे लगता है कि अभिषेक सुसमाचार का वचन है, जो पवित्र आत्मा को हम तक पहुँचाता है।

लेकिन अभिषेक पवित्र आत्मा नहीं है। अभिषेक सुसमाचार संदेश है। यह परमेश्वर का वचन है जिसे हम सीखते हैं और जो हमारे अंदर रहता है और जो परमेश्वर की आत्मा को हमारे पास पहुँचाता है।

इसमें एक सार है। यह सिर्फ धार्मिक अंतर्ज्ञान नहीं है, सिर्फ आत्मा नहीं है। यह पवित्र आत्मा है जो परमेश्वर के वचन, मसीह के संदेश और उस मामले में, सभी शास्त्रों के साथ हमारे पास आती है, जो पवित्र आत्मा द्वारा दिया गया है।

बाइबल सिखाती है कि जो अभिषेक आपको उससे मिलता है वह आप में बना रहता है। पवित्र आत्मा द्वारा प्रचारित सुसमाचार की सच्चाई आप में बनी रहती है। और आपको किसी से सिखाने की ज़रूरत नहीं है।

परन्तु जैसा उसका अभिषेक तुम्हें सब बातें सिखाता है, और वह सच्चा है, और झूठा नहीं, वैसे ही तुम में बने रहो। और अब बालक उसमें बने रहते हैं, कि जब वह प्रगट हो, तो हमें हियाव हो, और हम उसके आने पर उसके साम्हने लज्जित न हों। यदि तुम जानते हो, कि वह धर्मी है, तो निश्चय जान लो, कि जो कोई धर्म का काम करता है, वह उसी से उत्पन्न हुआ है।

अभिषेक की शक्ति को देखते हैं। पद 27 में, अभिषेक हमें हर चीज़ के बारे में हर तरह से मार्गदर्शन देने के लिए किसी पर दासतापूर्ण निर्भरता से ऊपर उठाता है। वह कहता है कि आप उससे मुक्त हो गए हैं।

आपको किसी की जरूरत नहीं है जो आपको सूक्ष्म रूप से प्रबंधित करे। किसी को भी आपको उस अर्थ में सिखाने की जरूरत नहीं है क्योंकि अभिषेक आपको सिखाता है। परमेश्वर का वचन आपको सिखाता है।

पवित्र आत्मा परमेश्वर के वचन को लागू करने के लिए मौजूद है। वह आपको निर्देशित करता है। और यह सच है।

यह उन बातों की तरह झूठ नहीं है जो लोग छोड़ कर चले गए हैं। इसलिए, इस अभिषेक की शक्ति के कारण, इसे काम करने दें। जुड़े रहें।

खोज करते रहें। आपने जो शुरू किया है और परमेश्वर आपके जीवन में क्या कर रहा है, उसके प्रति उत्तरदायी बने रहें। यह एक बहुत ही शक्तिशाली लाभ और अनुग्रह है जो विश्वासियों को परमेश्वर से मिलता है, परमेश्वर के वचन का अभिषेक, परमेश्वर का मार्गदर्शन, परमेश्वर की पवित्र आत्मा।

फिर इस अभिषेक और बने रहने का एक लाभ और निशान है। अभिषेक और बने रहना एक दूसरे से बहुत निकटता से जुड़े हुए हैं। और लाभ यह है कि आत्मविश्वास आता है।

ईसाइयों की हर पीढ़ी जो इस बारे में सोचती है, जानती है कि प्रभु वापस आ सकते हैं। और जॉन जानता था कि प्रभु वापस आ सकते हैं। और वह क्या खोजने जा रहा था? आप जानते हैं, यीशु ने कहानियाँ सुनाई, आप जानते हैं, तैयार रहो।

मनुष्य का पुत्र उस समय आ रहा है जिसकी आप उम्मीद नहीं करते। इसलिए, तैयारी बहुत महत्वपूर्ण है। और हम सभी अपने जीवन में ऐसे दौर से गुज़रे होंगे जब हम प्रभु की वापसी के लिए तैयार नहीं थे।

हमें भरोसा नहीं था। खैर, जॉन कह रहा है कि अभिषेक का एक लाभ भरोसा है और मसीह के आने के विचार से डरना या पीछे हटना नहीं है। आप निश्चित हो सकते हैं कि जो कोई भी धार्मिकता का अभ्यास करता है, वह उससे पैदा हुआ है।

तो, अभिषेक का चिह्न ईश्वरीयता की खोज है, ईश्वर के साथ सही संबंध की खोज है। तो यह अनिवार्यता है बने रहने की। फिर बने रहने की महिमा, अंतिम भाग।

देखो, पिता ने हमसे कैसा प्रेम किया है कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएं। हम हैं ... आप जानते हैं, जो लोग बने हुए हैं वे वे हैं जो मसीह पर विश्वास करते हैं और परमेश्वर की अपनी संतानों का दर्जा रखते हैं।

दुनिया हमें इसलिए नहीं जानती क्योंकि वह उसे नहीं जानती। प्रियों, हम अभी परमेश्वर की संतान हैं, और हम क्या होंगे यह अभी तक प्रकट नहीं हुआ है। लेकिन हम जानते हैं कि जब वह प्रकट होगा, तो हम उसके जैसे होंगे क्योंकि हम उसे वैसा ही देखेंगे जैसा वह है।

ईश्वर या मसीह पर अपनी नज़रें टिकाने से कुछ परिवर्तनकारी प्रभाव होंगे। और जो कोई भी इस तरह से उस पर आशा रखता है, वह खुद को शुद्ध करता है क्योंकि वह खुद शुद्ध है। हर कोई जो इसका अभ्यास करता है पाप करना भी अधर्म का अभ्यास करना है।

पाप तो अधर्म है। तुम जानते हो कि वह पापों को दूर करने के लिये प्रकट हुआ, और उसमें पाप नहीं: जो कोई उसमें बना रहता है, वह पाप नहीं करता।

जो कोई पाप करता रहता है, उसने न तो उसे देखा है और न ही उसे जाना है। हे बालकों, कोई तुम्हें धोखा न दे। जो धर्म का काम करता है, वह भी धर्मी है, क्योंकि वह स्वयं धर्मी है।

जो कोई पाप करने की आदत बनाता है, वह शैतान का है, क्योंकि शैतान शुरू से ही पाप करता आया है। परमेश्वर के पुत्र का प्रकट होना शैतान के कामों को नष्ट करने के लिए था। इसलिए हम इस भाग को समाप्त कर रहे हैं।

मैं इसे मुख्य सलाह कह रहा हूँ। हम उसके अभिषेक में बने रहते हैं और अनंत जीवन प्राप्त करते हैं। और हमने अभी जो शब्द पढ़े हैं, वे लगभग खुद ही हमें सिखाते हैं।

वह पहला श्लोक इस बात पर आश्चर्य व्यक्त करता है कि विश्वासियों को क्या प्राप्त करने और उसमें बने रहने के लिए कहा जाता है। चर्च से अलग होने और चले जाने वाले लोगों की तरह, उससे दूर जाने के लिए नहीं, बल्कि हमें उस प्रेम को देखने के लिए कहा जाता है जो पिता ने दिया है और उसके बच्चों के रूप में हमें जो दर्जा प्राप्त है। और यह हमें उन लोगों से कैसे अलग करता है जो इसे नहीं जानते या इसे नहीं चाहते हैं, लेकिन यह इसके लायक है, आप जानते हैं, यह कलंक के लायक है यदि आप इसे ऐसा कहना चाहते हैं।

फिर हमें कुछ आयतें मिलती हैं जो विश्वासियों की आशा और विश्वासियों की प्रतिक्रिया के बारे में बात करती हैं। आप जानते हैं, हमारी आशा उसके प्रकट होने में है, और हमारी प्रतिक्रिया यह है कि हम अपनी पवित्रता में बढ़ने जा रहे हैं। हम अपनी पवित्रता में, परमेश्वर के निर्देशन में बढ़ने जा रहे हैं, क्योंकि हम उससे मिलने के लिए तैयार रहना चाहते हैं।

और यही वह है जो वह हमें करने में सक्षम बनाता है। यही वह है जो वह हमें करने के लिए कहता है। यही है बने रहने का मतलब।

और हम उन लोगों की तरह नहीं बनना चाहते जो विपरीत दिशा में जा रहे हैं। आयत चार से छह में बने रहने के फल का वर्णन किया गया है, और वह है पाप से मुक्ति। यदि आप पाप का अभ्यास कर रहे हैं, तो आप अधर्म का अभ्यास कर रहे हैं।

और वह हमारे लिए प्रकट हुआ ताकि हम उससे बेहतर जीवन जी सकें। बने रहने का फल पाप और विनाश से मुक्ति है। और मैं यहाँ एक अंतिम टिप्पणी करूँगा, क्योंकि इस संदर्भ में कई आयतें हैं जो अब पाप न करने या पाप से मुक्त होने के बारे में बात करती हैं।

और मुझे लगता है कि हमारे पास मूल रूप से दो चीजों में से एक है। और यह अनुवाद, आधुनिक युग के अधिकांश अनुवाद, कुछ ऐसा कहते हैं कि हर कोई जो अभ्यास करता है पाप करना, श्लोक चार या श्लोक आठ, जो कोई भी इसका अभ्यास करता है पाप करना। यूनानी भाषा में इस शब्द का मतलब है 'सिर्फ पाप करना'।

और इसका अनुवाद इस प्रकार किया जा सकता है कि पाप निरंतर करता है, पाप करना जारी रखता है, क्योंकि यह वर्तमान काल है। इसलिए अनुवादक इस तरह से यह कहने को उचित ठहराते हैं कि हर कोई जो पाप करने का अभ्यास करता है, क्योंकि वे वर्तमान काल को देख रहे हैं और इसे एक तरह से बदल रहे हैं। जिस तरह से मैं इसे लेता हूँ, जब जॉन इस तरह के पाप करने और अधर्म का अभ्यास करने और पाप के अधर्म होने के बारे में पूर्ण शब्दों में बात करता है, तो मुझे लगता है कि वह इस अर्थ में पाप के बारे में बात कर रहा है जिसके बारे में वह इस पत्र में चेतावनी दे रहा है।

और जिस तरह हमारे पास परमेश्वर के साथ सही होने का तीन गुना तरीका है, विश्वास प्रेम में काम करता है, हमारे पास पाप करने की संभावना है या तो विधर्मी बनकर और जो हमें बताया गया है उस पर विश्वास न करके, विरोधी बनकर, परमेश्वर की कही बातों का पालन न करके, या कठोर हृदय वाले बनकर और परमेश्वर से प्रेम न करके। परमेश्वर से जन्मा कोई भी व्यक्ति परमेश्वर की संतान के गुणों को प्रदर्शित करने में विफल नहीं होता। यदि आप वास्तव में परमेश्वर से जन्मे हैं, तो आप परमेश्वर की शिक्षाओं पर विश्वास करने जा रहे हैं, आप उसकी आज्ञाओं का पालन करने जा रहे हैं, और आप परमेश्वर को जानने जा रहे हैं।

आप परमेश्वर के साथ एक व्यक्तिगत रिश्ता बनाने जा रहे हैं। आप परमेश्वर से प्रेम करने जा रहे हैं। अब, यूहन्ना ने पहले ही स्पष्ट कर दिया है कि हम पाप करते हैं।

और वह लिखता है कि अगर कोई पाप करता है, तो हमारे पास एक वकील है। और अगर हम अपने पापों को स्वीकार करते हैं, तो वह एक तरह के पाप के बारे में जानता है जिसे बाद में मुझे लगता है कि वह पाप कहेगा जो मृत्यु तक नहीं है। और वह यह भी कहता है कि अगर कोई किसी भाई को ऐसा पाप करते देखता है जो मृत्यु तक नहीं है, तो आपको उसके लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

उस व्यक्ति के लिए प्रार्थना करें। दूसरे शब्दों में, जब हम पाप करते हैं तो एक दूसरे को सुधारें, क्योंकि हम पाप रहित नहीं हैं। दूसरी ओर, ईश्वर से दूर दुनिया के प्रति समर्पण का एक स्तर है, मसीह के सच्चे सिद्धांत के प्रति नहीं, आज्ञाओं के प्रति नहीं, ईश्वर के व्यक्तिगत ज्ञान के प्रति नहीं जो पवित्र है, जो हमारे पापों को दूर करता है, जो हमें उसके साथ एक रिश्ते में लाता है।

मुझे लगता है कि जब वह कहता है कि जो कोई पाप करता है वह अधर्म का आचरण करता है तो यह पाप है। यानी, मैं जिस अर्थ में आपको चेतावनी दे रहा हूँ, उसी अर्थ में पाप करता हूँ। मैं आपको चेतावनी दे रहा हूँ कि आप यह कहने की राह पर न चलें कि यीशु मसीहा नहीं है।

अपने भाई से नफरत करने की राह पर मत जाओ। परमेश्वर से प्रेम करने में विफल होने की राह पर मत जाओ। यह एक पाप है जिसका मतलब है कि आप परमेश्वर की संतान नहीं हैं।

तो मैं इन्हें इस तरह लेता हूँ। दोनों में से कोई भी काम करता है। आप जानते हैं, विचार यह है कि पाप करना और मसीह के साथ व्यक्तिगत संबंध एक साथ नहीं चलते हैं।

की क्षमा मिल सकती है, इसलिए यदि हम पाप करते हैं, तो हमें उसे स्वीकार करना चाहिए। हमें उससे दूर रहना चाहिए। वह पापों को दूर करने के लिए आया था।

माफ़ करना नहीं है। इसका मतलब है उन्हें अपने जीवन से निकाल देना। अगर हम दुनिया से बहुत ज़्यादा प्यार करते हैं, तो आइए हम भगवान से प्यार करने का कोई तरीका खोजें।

लेकिन इसे जिस भी तरह से लिया जाना चाहिए, पाप ईसाई का मित्र नहीं है, और जॉन इसे हतोत्साहित करता है। और विश्वास और कार्य और प्रेम के संदर्भ में, सुसमाचार संदेश हमें ईश्वर के साथ पूर्ण अनुपालन और पूर्ण संगति में आने में सक्षम बनाता है, जो पाप की उपस्थिति और प्रभाव को कम करता है। यह डॉ. रॉबर्ट यारब्रो और जोहानिन एपिस्टल्स, बैलेंसिंग लाइफ इन क्राइस्ट पर उनकी शिक्षा है।

यह डॉ. रॉबर्ट यारब्रो और जोहानिन एपिस्टल्स, मसीह में जीवन को संतुलित करने पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 6, 1 जॉन, पूर्ण पैमाने पर विश्वास है। खंड 2 [2:7-17], केंद्रीय आज्ञा। खंड 3 [2:18-3:8] मुख्य परामर्श।